Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

(UGC Approved Journal No 48178, 48818)

ISSN 2278-5655

"गोदान नारी विमर्ष का दस्तावेज"

रितांजली श्रीराम जाधव

शोधछात्रा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा

विद्यापीठ, औरंगाबाद

मो.नं ९६६५०९६६३३

कथासम्राट प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास किसान जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज है। तो दुसरी और नारी जीवन के विविध पहूलओं को पाठक के सामने लाता है। किसान पिछडे लोगो दलितो एवं स्त्री जीवन मे-व्याप्त विसंगतियों का ब्रहद लेखा जोखा है। नारी विमर्ष का गोदान मे विसंगतियों का चित्रण है, तो दुसरी और नारी के महाकाव्य की जबरदस्त लहरे है।

कथा में स्त्रियोंका जीवन संघर्षमय और और यातनासे भरा हुआ है। दु:ख दैन्य के घेरे के बावजूद काफी शक्तीशाली है । होरी की तुलना मे धनिया कहीं अधिक साहसी, मजबूत और दुनियादारी है। वह सिर्फ आज नही देखती, आने वाले कल को भी देखती है। धनिया सख्त है, और सही समय पर सही निर्णय लेना जानती है। चाहे वह कितना की कठोर क्यों न हो पर इसका यह मतलब नहीं की उसका ह्दय भी कठोर है। गोबर और झुनिया को लगता है कि उसके कारण घर पर इतनी विपत्तियाँ आ रही है। वह सब दु:ख का कारण है।

प्रेमचंदजी का गोदान वास्तविक्ता को दर्शाने का प्रयास सफलता के रुप में सामने आता है, गोदान की कथा दो भागो में विभाजीत है, एक ग्रामीन तथा दुसरा शहरीकरण का ग्रामीण मे धनिया का शहरी में मानती है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कथा की सहनायिका है। मालती के संपूर्ण जीवन को दो भागों में विभाजीत किया जा सकता है। और यह विभाजन कथा में बडे चाव के साथ प्रस्तुत हुआ है। नारी का यह चित्र शक्ति प्रदान के रुप मे भी सामने आता दिखाई देता है। नारी मे सौदर्य है, रुप है, सुंदरता है, इस कारण नारी इस सृष्टी में ईश्वर की अद्वितीय कृती है जो साहित्य कला और समाज का चिरंतन विषय है। नारी पुरुष में सहयोग करनेवाला एक सुंन्दर और सुकुमार अंग है। १. कथा में धनिया एवं मालती भी सुंदर और सुशिल नारी है। मालती समाज में उच्च वर्ग के लोगो में उसका उठना बैठना है। बडे-बडे सिध्दान्तो की बाते करके बाल का खाल निकालना उसका बुध्दी विकास है। मालती तितली कि तरह प्राय: लुप्त हो जाती है, और उसमे मधुमखी के गुण आने लगते है। मालती शादीसुदा होकर भी मालती में अटूट वात्सल्य है। मालती गोबर के पुत्र मंगल की चेचक हो जाने पर ऐसी सेंवा मे डूब जाती है, जैसा अपना पुत्र इस सम्बन्ध मे मालती बच्चों को गोद में लिए बैठी थी, और बच्चा अनायास ही रो रहा था, याकिसी वजह सें डर गया था। मालती का यह अटूट वात्सल्य यह अदम्य मातृभाव देखकर उसकी ऑखे सजल हो गई । मन में ऐसी झलक उठी कि अन्दर जाकर मालती के चरणों को ह्दय से लगा ले। २

अन्त में कहे तो प्रेमचंद के गोदान इस उपन्यास में नारी विमर्ष के दस्तावेज को केंद्र बनाकर कई समस्याओं का चित्रण हुआ है। साथ ही कथा में धनिया मालती, नारी का यथार्थ वर्णन में कोई असर नही छोडती है। धनिया का जीवन संघर्ष से भरा पड़ा है। जो कि किसान के उस पत्नी को पता है। जिसने संघर्ष जीवन जिया है। इस कारण गोदान में किसान, होरी, एवं धनिया कि जीवन की महागाथा कहने में कोई कसर नही छोडती है, और पाठको को सोचने के लिए मजबूर करती है।

संदर्भः

१.आशा गुप्ता, नवम् दशक की हिंन्दी महिला कथाकारों की नारी चेतना पृ.४७
२. प्रेमचंद-गोदान पृ.२७९